

Mr. R Channabasavaiah

former Statistical Assitant

30.11.1994

Of all the persons I have met and worked for, I would say Dr Raj Narain stands out. His knowledge was immense. He would be attentive to everything, he would assess every point of work and he knew every worker personally. He always wanted the research worker to be open minded, industrious and to strive towards perfection. When a mistake was noticed he would call all the persons involved so that they would understand and learn from it. He would gently say mistakes do occur; be cautious and don't repeat it. It is wiser to take guidance than hide it. All the time he was smiling and would welcome any one any time, whatever the problem. He was so dynamic, nobody could sit by his side and be idle. The way he arranged the masses of data into tables and interpreted them was extraordinary. While with statisticians, he was a statistician yet, he was the topmost doctor among doctors. He would come with a book of statistics and give it to statisticians and ask them to explain a point. Later he would explain how he had understood it.

In the field, he was incomparable. His first priority was to the people with whom he would interact and get them to talk. There were days he worked as a secretary and even carried the petromax. He allowed total freedom to field workers and always stood by them and attended to their problems on priority. He set a very tight work schedule for himself and for the teams and often worked late into the night. Even in old age he worked hard. The last I saw him was in 1984 when he came to NTI as WHO short-time consultant. This time he was immersed in the implications of BCG scar disappearance. His life was dedicated to TB. He was living with his son in Canada and he told me of a TB control project he wanted that country to take up! Later, he died at Delhi while working at ICMR for BCG Trial

I would like to add Dr AK Chakraborty's name along with Dr Raj Narain. Dr Chakraborty was also a scientist of high calibre and great dedication. His work potential was immense. He had an additional capacity in creating scientists out of others! I feel he has created many. He had a broad outlook. I benefited immensely. Even today after retirement he is busy in the field of TB.

श्री. आर. चन्नाबसवय्या

भूतपूर्व सांख्यिकीय सहायक

३०.११.१९९४

उन सभी लोगों से जिनसे मैं मिला तथा जिनके साथ कार्य किया, डा.राजनारायन सबसे पृथक् थे । उनका ज्ञान असीमित था । वह इतने जागरूक थे कि प्रत्येक कार्य की समीक्षा करते थे तथा प्रत्येक कर्मचारी को व्यक्तिगत रूप से जानते थे । वह सदैव चाहते थे कि खोजी कार्यकर्ता को खुले दिमाग वाला तथा समपूर्णता की और अग्रसर होना चाहिए । जब कोई गलती उन्हे दिखती थी तो सभी शामिल लोगों को बुलाते थे जिससे सभी लोग समझ सकें तथा शिक्षा ग्रहण कर सकें । वह नम्रतापूर्वक कहते थे, गलतियाँ तो होती रहती हैं जागरूक रहो, गलतियों को छुपाओ मत तथा उसकी पुनरावृत्ति मत करो ।

वह सदैव प्रसन्नचित्त तथा दूसरों का स्वागत करने हेतु तत्पर रहते थे । वह इतने सजग थे कि कोई भी व्यक्ति उनके पास सुस्त नहीं रह सकता था । बड़े - बड़े आँकड़ों को सूचीबद्ध कर उनका निष्कर्ष निकालना उनकी विलक्षण प्रतिभा का परिचय था । सांख्यिकीय व्यक्ति के साथ सांख्यिकीय तथा चिकित्सक के साथ उच्चकोटि के चिकित्सक जैसा व्यवहार करना उनकी अपनी पहचान थी । कभी -कभी वह सांख्यिकी की किताब लेकर आते थे और सांख्यिकीय सहायक से किसी बिन्दु को स्पष्ट करने को कहते थे और बाद में स्वयं समझाते थे कि उन्होंने इसे कैसे समझा । क्षेत्र कार्य में वह अतुलनीय थे । उनकी पहली वरीयता यह थी की स्वयं एक उदाहरण प्रस्तुत करते थे तथा स्वयं एक सचिव की भाँति कार्य करते थे । यहाँ तक कि पेट्रोमैक्स भी उठाते थे ।

क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना तथा उनकी समस्याओं को प्रथम वरीयता से सुनकर उनका समाधान करना उनका लक्ष्य था । उनकी कार्यप्रणाली अत्यन्त कठिन थी तथा रात में देर तक कार्य करते थे । सेवा निवृत्ति के बाद वह अपने बेटे के साथ कनाडा में रह रहे थे ओर वहाँ भी एक क्षयनियंत्रक परियोजना स्थापित करने की सोच रहे थे ।

अन्तिम बार मैंने उन्हें १९८४ में विश्व स्वास्थ्य संगठन के परामर्शविज्ञा के रूप में राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान में पधारने पर देखा था । बी.सी.जी. ट्रायल की कुछ गुत्थी सुलझाने के लिये वह भारतीय आर्युविज्ञान अनुसन्धान परिषद के केन्द्र दिल्ली में गये जहाँ पर उनका निधन हो गया । उनका सारा जीवन ही क्षयरोग के लिए समर्पित था ।

मैं डा.ए.के. चक्रवर्ती का नाम भी डा.राजनारायन के साथ जोड़ना चाहूँगा । डा.चक्रवर्ती भी अपने कार्यकाल के दौरान एक और वैज्ञानिक रहे हैं । कार्यकाल के दौरान उनकी कार्य करने की क्षमता असीमित थी । उन्होंने कई वैज्ञानिक बनाए क्योंकि दूसरे व्यक्ति में वैज्ञानिक का भाव खोज लेना उनकी एक विशेषता थी । उनके व्यापक दृष्टिकोण से मुझे बहुत लाभ मिला । आज वह सेवा निवृत्त होने के बाद भी क्षय रोग के क्षेत्र में कार्यरत हैं ।